Mr. Sanjay Sharma

Assistant Professor

Department of Education

(UG and PG)

Subject -Education

Nehru Gram bharati

Deemed to be university.....

Scanned with CamScanner

15 शिक्षा में आदर्शवाद (IDEALISM IN EDUCATION)

"Idealism contends that the material and physical universe known to science is an incomplete expression of Reality, that it exists but to subserve and requires to complement it a higher type of reality, a spiritual universe."
—**Rusk.**

दार्शनिक सिद्धान्त के रूप में आदर्शवाद (Idealism as Philosophical Doctrine)

आदर्शवाद का अर्थ (Meaning of Idealism)

आदर्शवादी शब्द अंग्रेजी के आईडियलिज्म (Idealism) शब्द का रूपान्तर है जिसकी उत्पत्ति प्लेटो के विचारवादी सिद्धान्त (Theory of Ideas) से हुई है। इस सिद्धान्त के अनुसार अन्तिम सत्ता विचारों अथवा विचारवाद की है। इस प्रकार असली शब्द तो आईडियाइज्म (Ideaism) है किन्तु उच्चारण की सुविधा के लिए इस शब्द में अंग्रेजी भाषा के (L) अक्षर को जोड़कर इसे आईडियलिज्म (Idealism) की संज्ञा दी जाती है।

दार्शनिक सिद्धान्त के रूप में आदर्शवाद वस्तु की अपेक्षा विचारों, भावों तथा आदर्शों के महत्त्व को स्वीकार करके प्रकृति की अपेक्षा मानव तथा उसके व्यक्तित्व के विकास एवं आध्यात्मिक मूल्यों को जीवन का लक्ष्य स्वीकार करता है जिससे विभिन्नता में एकता (ईश्वर) का ज्ञान हो जाए।

आदर्शवाद की यह धारणा है कि भौतिक जगत (Physical world) की अपेक्षा आध्यात्मिक जगत (Spiritual world) अधिक उत्कृष्ट एवं महान् है। इसका कारण यह है कि भौतिक जगत नाशवान है। अत: यह असत्य है। इसके विपरीत आध्यात्मिक जगत विचारों, भावों तथा आदर्शों का संसार है जिसके ज्ञान से मन (Mind) तथा आत्मा का ज्ञान होता है। इस दृष्टि से इस महान् दर्शन के अनुसार केवल आध्यात्मिक जगत ही सत्य है। इससे परे तथा इसके पश्चात् और कुछ नहीं है। इस प्रकार आदर्शवाद, प्राकृतिक अथवा वैज्ञानिक तत्त्वों की अपेक्षा मानव के विचारों, भावों तथा आदर्शों की आध्यात्मिकता को अधिक महत्त्व देते हुए मानव तथा उसके मस्तिष्क के अध्ययन पर बल देता है।

इस दर्शन के अनुसार मानव की प्रकृति आध्यात्मिक होती है जिसकी अभिव्यक्ति वह बौद्धिक, सौन्दर्यात्मक तथा धार्मिक क्षेत्रों में करता है। निम्न जन्तुओं तथा पशुओं के साथ यह बात नहीं है। इसलिए पशुओं की अपेक्षा मानव का जीवन अधिक श्रेष्ठ होता है।

आदर्शवाद मानव के अध्ययन पर इसलिए भी अधिक बल देता है, क्योंकि अन्य पशुओं की तुलना में मानव की बुद्धि तथा विवेक आदि शक्तियाँ भी अधिक होती हैं। अपनी प्रखर बुद्धि एवं विवेक के बल पर मानव अन्य पशुओं की भाँति वातावरण का केवल दास ही नहीं बना रहता अपितु उसमें आवश्यकतानुसार परिवर्तन करके देवत्व का स्थान भी ग्रहण करता है तथा अनेक प्रकार की मानसिक, कलात्मक तथा धार्मिक क्रियाओं में भाग लेते हुए धर्म तथा आचरणशास्त्र आदि का सृजन करता है। वर्तमान सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक वातावरण मानव ने स्वयं ही बनाया है।

संक्षेप में, आदर्शवाद मानव तथा उसके विचारों, भावों तथा आदर्शों को महत्त्वपूर्ण स्थान देता है। इन्हीं आदर्शों तथा मूल्यों को प्राप्त करके मानव अपने व्यक्तित्व को विकसित करते हुए अपनी आत्मा का सच्चा ज्ञान प्राप्त करके परब्रह्म परमेश्वर के

Scanned with CamScanner

साथ साक्षात्कार कर सकता है। अत: आदर्शवाद के अनुसार वास्तविक सत्ता (Ultimate Reality) आध्यात्मिक है, भौतिक नहीं। इस दर्शन के अनुसार देश तथा काल में सृष्टि का क्रम, नित्य तथा आध्यात्मिक सत्य के प्रकटीकरण के कारण चलता है। इस प्रकार आदर्शवाद का क्षेत्र विश्व की अनादि, अपरिमित नित्य तथा अनन्त सत्ता है, न कि कोई तटस्थ एवं विरोधी संसार। होर्ने के शब्दों में —**''आदर्शवादी शिक्षा-दर्शन व्यक्ति को वह स्वरूप प्रदान करता है जिसमें वह अपने को मानसिक विश्व का पूर्णांश समझने लगे।''**[1]

आदर्शवादी दर्शन का प्रतिपादन, सुकरात (Socrates), प्लेटो (Plato), डेकार्टे (Descarts), स्पनोजा (Spinoza), बर्कले (Burkley), कान्ट (Kant), फिटके (Fitche), शेलिंग (Schelling), हीगल (Hegel), ग्रीन (Green), शॉपन हॉवर (Schophenhauer) तथा जेन्टाइल (Gentile) आदि अनेक पाश्चात्य तथा वेदों एवं उपनिषदों के प्रणेता महर्षियों से लेकर अरविन्द घोष तक अनेक पूर्वी दार्शनिकों ने किया है।

आदर्शवाद की परिभाषा (Definition of Idealism)

आदर्शवाद के अर्थ को और अधिक स्पष्ट करने के लिए हम निम्नलिखित पंक्तियों में प्रसिद्ध विद्वानों की परिभाषायें दे रहे हैं—

(1) डी० एम० दत्ता–''आदर्शवाद वह सिद्धान्त है जो अन्तिम सत्ता आध्यात्मिक मानता है।''[2]

(2) जे० एस० रॉस–''आदर्शवादी दर्शन के बहुत-से और विविध रूप हैं। परन्तु सबका आधारभूत तत्त्व यही है कि संसार का उत्पादन कारण मन तथा आत्मा है, कि वास्तविक स्वरूप मानसिक स्वरूप का है।''[3]

(3) बूबेकर–''आदर्शवादी इस बात का संकेत देते हैं कि संसार को समझने के लिए मन अथवा मस्तिष्क सर्वोपरि है। उनके लिए इससे अधिक और कोई बात नहीं है कि मन संसार को समझने में लगा रहे और किसी बात को इससे अधिक वास्तविकता नहीं दी जा सकती है, क्योंकि मन से अधिक किसी और बात को वास्तविक समझना स्वयं मन की कल्पना होगी।''[4]

Scanned with CamScanner

13 शिक्षा में प्रकृतिवाद
(NATURALISM IN EDUCATION)

"Naturalism is a doctrine which separates nature from God, subordinates spirit to matter and sets up unchangeable laws as supreme." —*Ward.*

दार्शनिक सिद्धान्त के रूप में प्रकृतिवाद
(Naturalism as a Philosophical Doctrine)

प्रकृतिवाद का अर्थ (Meaning of Naturalism)

प्रकृतिवाद को भौतिकवाद अथवा पदार्थवाद की संज्ञा भी दी जाती है। इस दर्शन के अनुसार पदार्थ ही जगत् का आधार है। मन भी पदार्थ का रूप है अथवा पदार्थ का एक तत्त्व है अथवा दोनों का मेल है। प्रकृतिवादी दर्शन पदार्थ, मन तथा जीवन की व्याख्या भौतिक तथा रासायनिक नियमों के द्वारा करके शक्ति, गति, प्रकृति के नियमों एवं कार्यकारण सम्बन्ध (Casual Relationship) की सहक्रिया पर बल देता है। प्रकृतिवाद के अनुसार केवल प्रकृति ही सब कुछ है। इससे परे अथवा इसके बाद और कुछ नहीं है। अत: मानव को प्रकृति की खोज करनी चाहिये जो केवल विज्ञान द्वारा ही हो सकती है। प्रकृतिवादियों का विश्वास है कि वर्तमान सभ्यता तथा सामाजिक विकास के कारण मानव प्रकृति से दूर हो गया है। प्रकृति के निकट आने पर उसका प्राकृतिक अथवा स्वाभाविक विकास हो सकेगा। इस प्रकार प्रकृतिवादियों के अनुसार अन्तिम सत्ता प्रकृति अथवा भौतिक तत्त्व है। वे आदर्शवादियों की भाँति आध्यात्मिकता में विश्वास करते हुए ईश्वर की सत्ता, आत्मा की अमरता एवं इच्छा की स्वतन्त्रता को स्वीकार नहीं करते। संक्षेप में प्रकृतिवादी दर्शन मन को पदार्थ के अधीन मानते हुए यह विश्वास करता है कि अन्तिम सत्ता भौतिक है, आध्यात्मिक नहीं।

प्रकृतिवाद के समर्थकों में **अरस्तू** (Aristotle), **कॉम्टे** (Comte), **हॉब्स** (Hobbes), **बेकन** (Bacon), **डारविन** (Darwin), **लैमार्क** (Lamark), **हक्सले** (Huxley), **हरबर्ट स्पेन्सर** (Herbart Spencer), **बरनार्ड शॉ** (Bernard Shaw), **सेमुअल बटलर** (Samual Butler), तथा **रूसो** (Rousseau) आदि दार्शनिकों के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

प्रकृतिवाद की परिभाषा (Definition of Naturalism)

प्रकृतिवाद के अर्थ को और अधिक स्पष्ट करने के लिए हम निम्नलिखित परिभाषायें दे रहे हैं—

(1) जॉयसे–"प्रकृतिवाद वह विचारधारा है जिसकी प्रमुख विशेषता आध्यात्मिकता को अस्वीकार करना है अथवा प्रकृति एवं मनुष्य के दार्शनिक चिन्तन में उन बातों को स्थान देना है जो हमारे अनुभवों से परे नहीं हैं।"[1]

(2) आर० बी०पैरी–"प्रकृतिवाद विज्ञान नहीं हैं, वरन् विज्ञान के बारे में दावा है। अधिक स्पष्ट रूप से यह इस बात का दावा करता है कि वैज्ञानिक ज्ञान अन्तिम है जिसमें विज्ञान से बाहर अथवा दार्शनिक ज्ञान को कोई स्थान नहीं है।"[2]

Scanned with CamScanner

प्रकृतिवाद तथा आदर्शवाद में शैक्षिक अन्तर
(EDUCATIONAL DIFFERENCE BETWEEN NATURALISM AND IDEALISM)

प्रकृतिवाद	आदर्शवाद
1. प्रकृतिवाद के अनुसार शिक्षा स्वाभाविक विकास है।	1. आदर्शवाद के अनुसार शिक्षा मुक्ति एवं पूर्णता की प्राप्ति का साधन है।
2. प्रकृतिवाद के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य इस प्रकार हैं— (i) आत्म-प्रकाशन (Self-expression)। (ii) वातावरण के साथ अनुकूलन। (iii) वैयक्तिकता का स्वाभाविक विकास। (iv) जातीय उपलब्धियों का संरक्षण। (v) आत्म-संरक्षण (Self-preservation) आदि।	2. आदर्शवाद के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य निम्नलिखित हैं— (i) आत्मानुभूति। (ii) सत्यं, शिवं एवं सुन्दरं की प्राप्ति। (iii) आध्यात्मिक व्यक्तित्व का विकास। (iv) चेतना की पूर्ण दशा की प्राप्ति। (v) पवित्र जीवन की प्राप्ति। (vi) शाश्वत एकता से एकाकार आदि।
3. प्रकृतिवादी पाठ्यक्रम बाल-केन्द्रित है। वे इसके निर्धारण में बालक की मूल-प्रवृत्तियों, रुचियों, क्षमताओं एवं वर्तमान आवश्यकताओं को आधार बनाते हैं। प्रकृतिवाद पाठ्यक्रम में प्राकृतिक विज्ञानों को महत्त्वपूर्ण स्थान प्रदान करता है।	3. आदर्शवादी पाठ्यक्रम विचार-केन्द्रित है। आदर्शवाद शाश्वत मूल्यों, विचारों एवं अनुभवों को आधार बनाकर पाठ्यक्रम का निर्माण करता है। यह पाठ्यक्रम में साहित्य, कला, संगीत, भाषा, इतिहास, भूगोल, धर्म, नीतिशास्त्र आदि को महत्त्वपूर्ण स्थान प्रदान करता है।

Scanned with CamScanner

4. प्रकृतिवाद की सबसे महत्त्वपूर्ण देन शिक्षण-विधि के क्षेत्र में है। यह करके सीखने, निरीक्षण, स्वानुभव आदि सिद्धान्तों पर बल देता है। इन सिद्धान्तों पर विभिन्न शिक्षण-विधियाँ— मॉण्टेसरी, डाल्टन, किण्डरगार्टन, ह्यूरिस्टिक, निरीक्षण आदि का निर्माण किया गया।	4. आदर्शवादी शिक्षण-विधि के क्षेत्र में किसी एक विधि के दास नहीं हैं। उनके अनुसार जीवन का स्पष्ट लक्ष्य निर्धारित करना ही महत्त्वपूर्ण है। वह लक्ष्य की प्राप्ति के लिए आवश्यकतानुसार किसी भी विधि को अपनाने का समर्थक है। सामान्यतः आदर्शवादी वाद-विवाद, व्याख्यान, प्रश्नोत्तर, तर्क आदि विधियों का प्रयोग करते हैं। आदर्शवादी स्व-क्रिया को नियन्त्रित एवं निर्देशित स्वतन्त्रता में प्रयोग में लाते हैं।
5. प्रकृतिवाद शैक्षिक प्रक्रिया में बालक को केन्द्रबिन्दु बनाता है।	5. आदर्शवाद बालक को गौण स्थान प्रदान करता है। यह विचारों को शैक्षिक प्रक्रिया का केन्द्रबिन्दु बनाता है।
6. प्रकृतिवाद शिक्षक को गौण स्थान प्रदान करता है। यदि उसका कोई स्थान है तो पर्दे के पीछे है। यह मात्र निरीक्षण करने वाला है। यह बालकों पर किसी प्रकार का प्रभाव नहीं डालेगा। प्रकृतिवादी प्रकृति को सर्वोत्तम शिक्षक मानते हैं।	6. आदर्शवाद शैक्षिक प्रक्रिया में शिक्षक को महत्त्वपूर्ण स्थान प्रदान करता है। आदर्शवादी शिक्षक को मानसिक आध्यात्मिक पूर्णता, सत्य को प्रमाणित तथा बालक का सर्वोत्तम विकास करने के हेतु आवश्यक मानते हैं। आदर्शवादी शिक्षा में शिक्षक एक कुशल माली के रूप में होता है।
7. प्रकृतिवाद विद्यालय को एक स्वतन्त्र वातावरण के रूप में ग्रहण करता है। यह वह स्थान है, जहाँ बालक का स्वाभाविक विकास हो सके। इसके अनुसार प्रकृति सर्वोत्तम विद्यालय है।	7. आदर्शवाद विद्यालय को एक आदर्श वातावरण के रूप में ग्रहण करता है, जहाँ बालक रूपी कोमल पौधे का सर्वोत्तम विकास किया जा सके। यह वह स्थान है जहाँ बालक चिन्तन हेतु उचित निर्देशन प्राप्त कर सके। आदर्शवादी विद्यालय में भौतिक तत्त्वों को महत्त्व न देकर सांस्कृतिक तत्त्वों एवं शिक्षक के व्यक्तित्व को महत्त्व प्रदान करते हैं।
8. प्रकृतिवाद मुक्त्यात्मक अनुशासन (Emancipationistic Discipline) पर बल देता है। इसके लिए यह अनियन्त्रित स्वतन्त्रता का समर्थक है।	8. आदर्शवाद प्रभावात्मक अनुशासन का समर्थक है। यह अनुशासन के लिए आत्म-नियन्त्रण को आवश्यक मानता है। यह आत्म-नियन्त्रण, प्रेम, सहानुभूति एवं मार्ग-प्रदर्शन द्वारा अनुशासन स्थापित करने का पक्षपाती है। आदर्शवादी नियन्त्रित स्वतन्त्रता के समर्थक हैं।

Scanned with CamScanner

9. प्रकृतिवाद सह-शिक्षा का समर्थक है।	9. आदर्शवाद लिंगीय भेद को मान्यता प्रदान करता है। इसी कारण यह सह-शिक्षा का समर्थक नहीं है और बालक तथा बालिकाओं के लिए पृथक्-पृथक् विद्यालयों की स्थापना पर बल देता है।
10. प्रकृतिवाद पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं को पाठ्य-विषयों की भाँति आवश्यक एवं महत्त्वपूर्ण मानता है।	10. आदर्शवादी पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं को महत्त्वपूर्ण स्थान नहीं देते। इस कारण आदर्शवादी शिक्षा सैद्धान्तिक बनी रहती है।
11. प्रकृतिवाद वैयक्तिक विभिन्नता के अनुसार शिक्षा प्रदान करने का पक्षपाती है।	11. आदर्शवाद शिक्षा में वैयक्तिक विभिन्नता पर कोई ध्यान नहीं देता।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner